शबनमी सावन

सावन की जल-बून्द गिरी।
महका मौसम शबनम चमकी।।

सूखे अधरों पर फिर देखो,
रस-प्रेम-माधुरी सी छलकी।।

प्यासे नयनों में दर्शन की,
पिय के देखो फिर आस जगी।।

फिर सूर्य हुआ मद्धम-मद्धम,
फिर घन-गहरे बिजली चमकी।

यादों की फिर ज्वाल उठी,
मोहन दहके, राधा दहकी।।

दोनों की पीर बही जमकर,
ब्रज की रज सौंधी सी महकी।।

मुख भीग उठा अश्रु जल से,
उनसे जब की न गई मनकी।।

था बरस रहा जल अम्बर से,
विरही के मन बरसी अगनी।।

✍गोपाल कृष्ण व्यास